जगदीश चन्द्र माथुर और विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

शिक्षा शास्त्र में पीएच.डी. उपाधि

हेतु शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

JV'n डॉ. चित्रा

शोधार्थी

JV'n स्मिता शर्मा

Enrollment No. JVR-1/18/10028

शिक्षा एवं प्रविधि विभाग

शिक्षा एवं प्रविधि संकाय

ज्योति विद्यापीठ, महिला विश्वविद्यालय,

जयपुर (राज.)

2018

प्रस्तावना

नाटक साहित्य ऐसी विद्या है जिसकी आज भी एक लम्बी परम्परा चलती आ रही है। नाट्य शास्त्र की रचना भी सबसे पहले भारत में ही हुई जिसके अनेक आचार्य हुए। जिन्होंने नाटकों के तत्वों विषय, शैली पर बड़े विस्तार और गम्भीरता से विचार किया है साहित्य की सभी विद्याओं में नाटक ही वह विद्या है जिसमें अनुकरण पर सर्वाधिक बल दिया गया है।

जगदीश चन्द्र माथुर आधुनिक हिन्दी नाटकों में छायावादी हिन्दी नाटकों के प्रमुख नाटककार है तथा विष्णु प्रभाकर आधुनिक हिन्दी नाटकों में स्वातन्त्रयोत्रर के प्रमुख नाटककार है। इस शोध कार्य में इन दोनों नाटककारों के नाटकों में नारी का अध्ययन किया जाएगा।

मैने अर्थात् शोद्यार्थी ने प्रस्तुत शोध को पंचम अध्यायों में विभाजित किया है।

साहित्य की समीक्षा–

हीरन मुलर के नाटक वेर्कमनीस उफर मेडेमैटर लैंडस्केपफ्ट मिट अरगोनॉटन के हिंदी में थियेटर अनुवाद के साथ एक सगाई

आरती कुमारी

यह पेपर थिएटर अनुवाद के क्षेत्र से संबंधित मुद्दो के साथ संलग्न करने के लिए मुलेर के नाटक वेर्कमोनीज उफर के प्रदर्शन के माध्यम से अपने हिंदी अनुवाद के प्रदर्शन को देखता है। वर्तमान बहस के संदर्भ में हिंदी में उनके नाटक के निर्माण की प्रक्रिया के बारे जाना दिलचस्प है जो थिएटर के क्षेत्र में अनुवाद के संबंध में उभर रहे हैं। यह विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि रंगमंच अनुवाद के क्षेत्र में होने वाली बहस साहित्यिक अनुवाद और थिएटर अनुवाद के बीच विभेदीकरण करती है जो कि रंगमंचीय अनुवाद काल्पनिक प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

गिरीश कर्नाड और विजय तेंदुलकर के नाटकः एक तुलनात्मक अध्ययन

प्रियंका जे चौहान

राजकोट, 2013

पृष्ठ 1. 228 ग्रंथ सूची प्राथमिक स्त्रोतः कर्नाड, गिरीश। तुगलक। दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1986.....। द फायर एंड द रेन, दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988.....। नागा मंडलः कोबरा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990 के साथ खेलते हैं।

नायकों, इतिहास और पुस्तिकाएं

बद्री नारायण

आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 3923–3934, 2001

1980 के दशक के प्रारंभ में बहुजन राजनीति के उदय के साथ पिछडे वर्गों के बीच जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से साहित्य और लेखन, प्रचार और प्रकाशन में सक्रिय दलित–बहुजन मूल के शिक्षित और राजनीतिक रूप से जागरूक मध्यवर्ग का उदय हुआ। साहित्य में नए नायकों का उदय और उपेक्षित और उपेक्षित परंपराओं का संबंध स्वाभिमान और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने की आवश्यकता से है। लेकिन पहचान की अपनी खोज में, दलित–बहुजन साहित्य, जो खुद को काउंटर–साहित्य के रूप में प्रस्तुत करता है, ब्राह्यमण साहित्य की उपेक्षा से भी इसका अहसास करता हैं।

स्वतंत्रता के थिएटरः 1947 से भारत में नाटक, सिद्वांत और शहरी प्रदर्शन

अपर्णा भार्गव धारवाडकर

आयोवा प्रेस विश्वविद्यालय, 2009

आजादी के बाद का नाटक भारत मे नाटक, रंगमंच और शहरी प्रदर्शन का पहला व्यापक अध्ययन है। सैद्वांतिक विश्लेषण और साहित्यक व्याख्या के साथ रंगमंच के इतिहास को जोडते हुए, अपर्णा धारवाडकर ने लेखन और प्रदर्शन के लिए अभूतपूर्व परिस्थितियों की जांच की कि एक दर्जन प्रमुख भारतीय भाषाओं मे नए राष्ट्रवाद का अनुभव और

प्रमुख नाटकों, नाटककारों निर्देशकों, नाटकीय शैलियों की विस्तृत चर्चा की पेशकश की, और नाटक के सिद्वांत जिन्होने समकालीन भारतीय मंच को उत्तर औपनिवेशिक और विश्व रंगमंच का महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया है। धारवाडकर के अध्ययन का पहला भाग 1950 के बाद उभरे नए नाटकीय कैनन से संबंधित है और जिस तरह से नाटक लिखं, निर्मित, अनुवादित, प्रसारित और बहुभाषी राष्ट्रीय संस्कृति में प्राप्त किए गए हैं। दूसरा भाग मिथक, इतिहास, लोक कथा, समाजशास्त्रीय अनुभव, और भारतीय, यूरोपीय, ब्रिटिश और अमेरिकी नाटक के बीच के पारस्परिक संबंधों उनकी उत्पत्ति से महत्वपूर्ण उत्तर औपनिवेशक नाटकीय शैलियों के गठन का पता लगाता है। पुस्तक के दस परिशिष्ट प्रमुख नाटककारों और निर्देशकों के काम के व्यापक दस्तावेज एकत्र करते है।

आधुनिक हिंदी नाटक का ''भारतीय'' चरित्रः नव–संस्कृत, प्रो–पश्चिमी प्रकृतिवादी, या प्राकृतिक नाटक ?

डायना दिमित्रोवा
धर्मशास्त्र और साहित्य, 2006

यह निबंध प्राकृतिक हिंदी नाटक के ''भारतीय'' चरित्र की धारणा से संबंधित है, जैसा कि मोहन राके (1925–1972), भुवनेश्वर (1912–1957), और उपेन्द्रनाथ अक्क (1910–1996) के नाटकों में पता चला है, जो वेक में लिखते हैं पश्चिमी रंगमंच और जो प्रसाद के प्रभावशाली नाटय विद्यालय (1889–1937) के विरोधी थे। यह सवाल उठाकर हिंदी नाटक के भारतीय चरित्र को दर्शाता है। भारतीय परंपरा क्या है ? क्या इसमे केवल पश्चिमी (ब्रिटिश), या ब्रह्मणी (संस्कृत), या स्वदेशी (लोक) तत्व और प्रभाव शामिल है, या क्या यह उन सभी द्वारा एक साथ सूचित किया जाता है ? क्या यह तथ्य कि प्राकृतिक हिंदी नाटक अभियोग थिएटर के लिए है, जो विदेशो से आया है, इसका मतलब है कि इसका चरित्र गैर–भारतीय है ? आधुनिक हिंदी नाटक के भारतीय चरित्र की अवधारणा और उसके कैनन बनाने से संबंधित विचारधारा का मुद्दा कैसा है ?

प्रथम अध्याय : नाटक विद्या के इतिहास मे नारी के स्वरूप का अध्ययन करना।

नाटक साहित्य की अत्यन्त लोकप्रिय एवं प्राचीन विद्या है। अन्य साहित्यिक विद्याओं की भांति हिन्दी साहित्य में नाटक का विशिष्ट स्थान है। 13वी. शताब्दी कें अंत से प्रारम्भ होकर आज तक 70–80 वर्षो में हिन्दी के नाट्य साहित्य का जो विकास हुआ वह अत्यन्त लोकप्रिय है। निःसन्देह आज का हिन्दी साहित्य बहुमुखी और सम्पन्न है। उद्‌भव काल से ही भरतीय नाटक साहित्य पर पश्चिमी नाट्य कला का गहरा प्रभाव पड़ा है। उसके नाटकीय तत्वों कथानकों तथा रचनागत व्यवहारों और रूढियों को अपना कर ही भारतीय भाषाओं में नाटक का विकास हुआ है।

हिन्दी नाटक की परम्परा के अनुसार ही भारतेन्दु जी और उनके समकालीन नाटककारों ने पुरानी परम्परा के आधार पर ही अपने नारी पात्रों को चित्रित करते रहे। जबकि प्रसाद ने नारी को पहली बार आत्मगौरव प्रदान किया । प्रसादोत्तर कालीन नाटककारो ने नारी को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया। और अनेक नाटककारों के नाटको मे नारियों का दृष्टिकोण हर क्षेत्र में स्पष्ट रहा है।

द्वितीय अध्याय : जगदीश चन्द्र माथुर का जीवन एवं साहित्यिक परिचय ।

जगदीश चन्द्र माथुर जी का जन्म 16 जुलाई 1917 को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के खुर्जा गांव में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा खुर्जा में हुई। उच्च शिक्षा युईग क्रिश्चियन कॉलेज इलाहाबाद और प्रयाग

विश्वविद्यालय में हुई। प्रयाग विश्वविद्यालय का वातावरण और प्रयाग के साहित्यिक संस्कार माथुर जी के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है।

1939 ई. प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. अंग्रेजी विषय में किया। बाद में 1941 ई. में इंडियन सिविल सर्विस में चुने गए थे। सरकारी नौकरी में 6 वर्ष बिहार शासन में काम किया। 1955 ई. से 1962 ई. तक आकाशवाणी भारत सरकार के महासंचालक के रूप में कार्य किया 1963–64 में ही हार्वड विश्वविद्यालय अमेरिका में विजिटिंग फेलो नियुक्त होकर विदेश चले गए।

वहाँ से आने के बाद विभिन्न महत्वपूर्ण पदो पर काम करते हुए 19 दिसम्बर 1971 ई. में भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे। माथुर जी नौकरियों में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने भारतीय इतिहास और संस्कृति को वर्तमान संदर्भ में व्याख्यायित करने का प्रयास किया था।

जगदीश चन्द्र माथुर का अध्ययनकाल से ही लेखन प्रारम्भ होता है। आरम्भ से ही उनकी रूचि अभिनय की और थी । अपने छात्र जीवन में ही आपने विश्वविद्यालय में नाटकों के माध्यम से अपनी सृजनशीलता की धारा के प्रति उन्मुख हुए। प्रयाग विश्वविद्यालय मे उन्होनें नाटक लिखे थे, 'चांद', 'रूपाम' पत्रिकाओं में नही छापे पर इन्होंने वीर अभिमन्यु आदि नाटकों मे भाग लिया। भोर का तारा में संग्रहित सारी रचनाएं प्रयाग में लिखी गई थी यह नाम प्रतीक रूप में शिल्प और संवेदना दोनो दृष्टियों से माथुर जी के रचनात्मक व्यक्तित्व के भोर का तारा ही है। इनके बाद ही रचनाओं को समकालीनता और परम्परा के प्रति गहराई क्रमशः बढ़ती गई है। व्यक्तियों, घटनाओं और देश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त अनुभवों ने सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आपके एकांकी जीवन

की यथार्थ संवेदना को चित्रित करते है व्यापक परिवर्तनों का प्रभाव मध्यम वर्ग पर ज्यादा पड़ता है।

समालोचना

माथुर जी के नाटकों में कौतूहल और स्वच्छंद प्रेमाकुलता है।

'भोर का तारा' में कवि शेखर की भावुकता पर्यावरण में घटित करने या रचने का मोह भी प्रारम्भ से मिलता है। परन्तु समसामयिक को अनुभव के रूप में अनुभूत करके उसकी प्रामाणिकता को संस्कृति के माध्यम से सिद्व करने का जो आग्रह प्रयास उनके नाटकों में मिलता है।

'कोणार्क' नाटक माथुर जी का प्रथम तथा सर्वोत्कृष्ट नाट्य कृति है यह इतिहास संस्कृति और समकालीनता मिलकर निश्वधिकाल की धारणा और मानवीय सत्य की आस्था को परिपुष्ट करता है। और उनका पहला राजा नाटक और रचना विधान और वातावरण को माध्यम और संदर्भ के रूप में प्रयोग करके लेखक ने व्यवस्था और प्रजाहित के आपसी रिश्तों को मानवीय दृष्टि से समझने या वक्त करने का प्रयास भी किया है।

जगदीश चन्द्र माथुर छायावादी संवेदना के रचनाकार थे। जगदीश चन्द माथुर का निधन 14 मई 1978 में हुआ था।

उपन्यास

1 यादो का पहाड़

2 आधा पुल

3 मुठ्ठी भर कांकर

4 कभी न छोड़े खेत

5 धरती धन न अपना

नाटक

1 भोर का तारा (1946) ई.

2 कोणार्क (1951) ई.

3 ओ मेरे सपने (1950) ई.

4 शारदीया (1959) ई.

5 दस तस्वीरें (1962) ई.

6 परंपराशील नाट्य (1967) ई.

7 पहला राजा (1969) ई.

8 जिन्होंने जीना जाना (1972) ई.

भोर का तारा (1957) ई.

भोर का तारा जगदीश चन्द्र माथुर का श्रेष्ठ प्रतिनिधि एकांकी है। इसमें कला और देश प्रेम का संघर्ष यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया गया है।

पहला राजा (1969) ई.

इस नाटक के कथानक में वैदिक कालीन पात्रों प्रसंगों और स्थितियों के माध्यम से समकालीन जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया गया है। पृथु की समस्याओं को नेहरू युग की समस्याओं से जोडा गया है।

कोणार्क (1951) ई

इस नाटक से जगदीश चन्द्र माथुर जी को हिन्दी नाट्य में प्रतिष्ठा मिली। 1950 ई से 1960 ई. के दशक में यह सर्वाधिक (प्रसिद्व) मंचित नाटक रहा था यह नाटक उड़ीसा के प्रसिद्व सूर्य मंदिर पर आधारित है।

रीढ़ की हड्डी (1953) ई.

इसमें सामाजिक खोखलेपन की सच्चाइ को उजागर किया गया है। यह एक प्रतीकात्मक एकांकी है। प्रतिकार्य यह है कि आज के युग में

नवयुवकों की रीढ़ की हड्डी गायब हो गई है । वे नैतिक चरित्र से शून्य है।

शारदीय (1959) ई.

इस नाटक माथुर जी ने इतिहास पर अत्यन्त प्रकाश डाला है माथुर जी ने नाटक को बड़े भावपूर्ण ढंग से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। नाटक की रचना आपने थोडा बहुत कल्पना का आश्रय भी लिया है लेकिन उससे नाटक की स्वाभाविकता में विशेष अन्तर नही आया।

तृतीय अध्याय : विष्णु प्रभाकर का जीवन एवं साहित्यिक परिचय ।

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून 1912 ई. में हुआ उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर जिले के गांव मीरापुर में हुआ था। उनके पिता दुर्गा प्रसाद एक धार्मिक विचारो वाले व्यक्ति थे और उनकी माता महादेवी पढ़ी लिखी महिला थी। जिन्होंने अपने समय में पर्दा प्रथा का विरोध किया था। उनकी पत्नी का नाम सुशीला था। विष्णु प्रभाकर की आरंम्भिक शिक्षा मीरापुर में हुई । बाद में वे अपने मामा के साथ हिसार चले गये जो तब पंजाब प्रान्त का हिस्सा था घर की हाल ठीक नही होने के कारण वे आगे की पढ़ाई ठीक से नही कर सके और गृहस्थी चलाने के लिए उन्हें सरकारी नौकरी करनी पड़ी

चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी के तौर पर काम करते समय उन्हें प्रतिमाह 18 रूपये मिलते थे। लेकिन मेधावी और लगनशील विष्णु जी ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और उन्होंने हिन्दी में प्रभाकर और भूषण की उपाधि प्राप्त की साथ ही संस्कृत में प्रज्ञा और अंग्रेजी में बी.ए. की डिग्री पास की और विष्णु प्रभाकरजी पर महात्मा गांधी के दर्शन और सिद्वान्तों का गहरा

असर पडा। अपने दौर के लेखकों में वे प्रेमचन्द यशपाल जैनेन्द्र और अज्ञेय उनके महारथियों के सहयात्री रहे लेकिन उन्होंने रचना के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बना ली।

विष्णु प्रभाकर ने पहला नाटक लिखा–हत्या के बाद फिर हिसार में नाटक मंडली में भी काम किया। फिर बाद में उन्होंनें लेखन को ही अपनी जीविका बना लिया।

आजादी के बाद वे नई दिल्ली चले गए और सितम्बर 1955 में आकाशवाणी में नाट्य निर्देशक के रूप में कार्य किया वहां पर विष्णु जी ने 1957 ई. तक कार्य किया। इसके बाद वे तब सुर्खियों में आए जब राष्ट्रपति भवन में दुव्यर्वहार के विरोध स्वरूप उन्होंने पद्यभूषण की उपाधि वापस करने की घोषणा कर दी गई।

विष्णु प्रभाकर जी आकाशवाणी, दूरदर्शन पत्र–पत्रिकाओं तथा प्रकाशन संबंधी मीडिया के विविध क्षेत्रों में पर्याप्त लोकप्रिय रहे। उनका लेखन कार्य का सिलसिला निरन्तर चलता रहा है। नाथूराम शर्मा प्रेम के कहने से वे शरतचन्द्र की जीवनी आवारा मसीहा लिखने के लिए प्रेरित हुए उन्होंने शरतचन्द्र को जानने के लिए सभी स्थानों व अलग–अलग जगहों तक गए। उन्होंने बांग्ला भाषा भी सिखी और जब यह जीवनी छपी तो साहित्य में विष्णु जी धूम मच गई। प्रभाकर जी की रचनाएं आज के भारतीय समाज की समस्याओं पर केन्द्रित है। आपने नाटक टूटते परवेश में वह एक आधुनिक परिवार के बारे में लिखते है। जिसमें युवा और परानी पीढी के बीच अंतरारल बढ़ रहे है।

नाटक और एकांकी

विष्णु प्रभाकर जी को नाटकों के माध्यम से हिन्दी साहित्य में ख्याति प्राप्त हुई। सन् 1967 ई से लेकर अब तक वे इस क्षेत्र में अपनी लेखनी पर बल दिया उनके नाटकों के माध्यम से हमें विभिन्न प्रकार की समस्याओं का चित्रण भी मिलता है।

1 नवप्रभात, 1951

2 समाधि (गांधार की भिक्षुणी), 1952

3 डॉक्टर, 1961

4 टूथ–ओ परवेश, 1974

5 युग–युग क्रांति

6 कुहासा और किरण, 1975

7 तंगर, 1977

8 बंदिनी, 1979

9 सट्टा के आर–पार, 1981

10 अब और नही, 1981

11 श्वेत कमल, 1984

12 केरल की क्रांति, 1987

13 विष्णु प्रभाकर : सम्पूर्ण नाटक (भाग–1,3,3) 1987

14 पुष्पक किट

15 सीमा रेखा

16 संस्कार और भव

उपन्यास

1 धाल्टी रावत, 1951

2 निशिकांत, 1955

3 टाट के बंधन, 1955

4 स्वप्नमयी, 1956

5 दरपन का व्यक्ति, 1968

6 परचाई, 1968

7 कोई तो, 1980

8 अर्ध नारीश्वर, 1992

कहानी संग्रह

1 एक कहानी का जनम (एक कहानी का जन्म) (उनकी प्रेम कहानियों का संग्रह) 2008

2 आदी और चींटी,

3 रहमान का बेटा, 1947

4 जिन्दगी की थीपेड, 1952

5 संघर्ष के बाल, 1953

6 धरती अब भी घूम रही है, 1959

7 सफ़र के साथी, 1960

8 खांडित पूजा, 19630

9 सांचे और कला, 1962

10 मेरी टेंटिस काहनियां, 1967

11 मेरी प्रिया कहानियां, 1970

12 पुल टुटने से पहले, 1977

13 मेरा वतन, 1980

14 मेरी लोकप्रिययया कहानिया, 1981

15 खिलोन, 1981

16 आपी कृपा (लघु कथाएँ), 1982

17 मेरी कहानियां, 1984

18 मेरी कथायात्रा, 1984

विष्णु प्रभाकर ने अपने नाटको मे नारी के बारे में अनेक रूपो को व्यक्त किया है। उनकी कहानी की सीमाएं है। कहानी में हम जीवन के किसी एक पक्ष को ले सकते है। प्रभाकर जी अपने तीसरे दशका का कहानीकार माने जाते है स्वतन्त्रता पूर्व से यानी सन् 1937 में उन्होंने 1938 में प्रथम कहानी लिखी। उनका निधन दिनांक 11 अप्रैल, 2009 को नई दिल्ली में हुआ था।

चतुर्थ अध्याय : जगदीश चन्द्र माथुर और विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी का तुलनात्मक अध्ययन

जगदीश चन्द्र माथुर ने अपने नाटकों के द्वारा लोगो को जागरूक करना चाहते थे। उन्होंने ऐसे नाटक लिखे जो कि ऐतिहासिक नाटक भी थे सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया माथुर जी ने ऐतिहासिक नाटकों में भी विशेष प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने ऐतिहासिक नाटको की परम्परा में कोणार्क नाटक एक नवीन धारा का सूत्रपात करता है। इस नाटक में आपने जनता की उभरी हुई विद्रोही सामूहिक शक्ति को नायकत्व प्रदान किया है। माथुर जी ने वर्तमान समाज की जटिल से जटिल समस्याओं को अपने संघर्षो तथा विवशताओं का आपने अत्यन्त व्यापक परिवेश में कलात्मक तथा यथार्थपटक ढंग से चित्रण किया है। जैसे खण्डहर तथा मकडी का जाला आपके सर्वश्रेष्ठ एकाकी नाटक है। वातावरण की सृष्टि देखने को मिलती है।

समाज मे नारी के प्रति आज की व्यवस्थाओ के बोझ के कारण हृदय की कोमल भावनाएं दबती जा रही है। उनकी अभिव्यक्ति का अवसर नही मिलता है। इस अनुभूति को आपने कबूतरखाना में वक्त की है। नव मध्य वर्ग की नवीन समस्याओं का आपने आधुनिक यथार्थ का उद्घाटन व 'ओ मेरे सपने' में किया है।

विष्णु प्रभाकर के नाटकों का वर्गीकरण पांच भागों में कर सकते है जैसे–

1 मनोवैज्ञानिक नाटक

2 ऐतिहासिक नाटक

3 रूपान्तरित नाटक

4 राजनीतिक नाटक

5 सामाजिक नाटक

1 मनोवैज्ञानिक नाटक

विष्णु प्रभाकर पुराने और अनुभवी नाटककार होने के नाते नाटक की समस्याओं की गहराइयों तक जाकर उन समस्याओं का गहन अध्ययन करके अपने मनोवैज्ञानिक नाटक लिखे थे जो बहुत सफलता प्राप्त हुई।

मनोवैज्ञानिक नाटक है

1 डॉक्टर – 1958

2 बन्दिनी – 1979

3 तगर–1988

2 ऐतिहासिक नाटक

प्रभाकर जी ने जिसमें पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं का सहारा भी लिया जाता है।

प्रमुख ऐतिहासिक नाटक

1 नव प्रभात–1951

2 समाधि –1962

शोध के उद्देश्य

1. नाटक विद्या के इतिहास मे नारी के स्वरूप का अध्ययन करना
2. जगदीश चन्द्र माथुर के नाटकों मे नारी से जोडे ऐतिहासिक सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना।
3. विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी के सामाजिक संस्थानो के विघटन एवं खोखलेपन का अध्ययन करना।
4. दोनो नाटककारों के नाटकों मे नारी के आधार पर एक–दूसरे का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. वर्तमान मे नारी के मूल्यों मे आ रहे, विघटन व परिवर्तनों का अध्ययन करना।

शोध की विधि

1. प्रस्तावित शोध कार्य के लिए सबसे पहले नारी से जोड़े नाटकों के साहित्य का अध्ययन करना जरूरी होगा। जिसमें प्राचीन हिन्दी नाटक से लेकर आधुनिक हिन्दी नाटक की विकास यात्रा को विस्तार रूप से समझना आवश्यक होगा।
2. नारी के साथ–साथ स्वातन्त्रयोतार हिन्दी नाटकों का अध्ययन करके उन नाटकों के तत्वों के विभिन्न पहलूओ को समझकर उनका समाज के आधार पर अध्ययन करना।
3. विष्णु प्रभाकर के नाटकों मे नारी से सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करके नाटक के तत्वों के विभिन्न पहलुओ का समझकर अध्ययन करना।
4. जगदीश चन्द्र माथुर और विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी से सम्बंधित कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

5. नारियों की शोध विधि से प्रस्तावित शोध प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण शोध प्रबन्ध बन सकेगा।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

1. नाटकों मे नारी विद्या के प्रति ज्ञान के विकास मे संयोग देना।
2. समाज मे नारी के प्रति आ रहे, मानव मूल्यों का विघटन को प्रदर्शित करना।
3. समाज मे ज्ञान एवं चेतना के आधार पर नाटकों मे नारियों के संदर्भ मे एक नई सोच उत्पन्न करना।
4. आज समाज मे नारियो को लेकर व्याप्त कुप्रथाओं एवं रूढ़िवादी सोच के दुष्प्रणामों को उजागर करने की आवश्यकता है।
5. शोध मे नारियों का नाटकों के आधार पर अनुसंधान सामाजिक विकास मे सहायक है।
6. शोध या अनुसंधान से व्यावहारिक समस्याओं के प्रति ज्ञान होना आवश्यक है।

उपसंहार

नाटक साहित्य की व्यापक विद्या होने के कारण तुलनात्मक अध्ययन के रूपायन में अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा सशक्त है। नाटक दृश्य एक काव्य है। इसलिए शिक्षित और अशिक्षित दोनो रंगमंच पर इसके अभिनय से लाभान्वित हो सकते है। देश की राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियां नाटक साहित्य को रूपायित करने वाली महत्वपूर्ण परिस्थितियाँ है।

जगदीश चन्द्र माथुर के नाटक रंगमंचीय दृष्टि से उपयोगी है। उनके नाटक परम्परा और आधुनिकता के बीच एक सेतू का काम करते है। नाटक भारतीय समाज और साहित्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

विष्णु प्रभाकर ने आधुनिक हिन्दी साहित्य की जन–जीवन की समस्याओं को सीधा जोड़ा है और हिन्दी के आधुनिक सामाजिक नाटकों के खोखलेपन को अभिव्यक्त किया है तथा विष्णु जी के नाटकों में चेतना के विविध रूप विधमान है। जिसके द्वारा वे समाज की खोखली मान्यताओं, विद्रुपताओं, विषमताओं, शोषण, भ्रष्टाचार तथा अन्याय पर प्रहार करते है। और त्याग, बलिदान, राष्ट्रप्रेम, देश का गौरव, करूणा जैसे उदात्व भावों की व्यंजना तथा राष्ट्र प्रवृत्तियों के विरूद्ध राष्ट्रीय भावों की चेतना को उजागर करते है।

पंचम अध्याय : निष्कर्ष

जगदीश चन्द्र माथुर के नाटकों में भारतीय जीवन सम्बन्धी अनेकानेक विषयों तथा तत्संबंधी समस्याओं को स्थान मिला है। इन्होंनं उन विषयों का प्रतिपादन शिष्ट व्यग्य के माध्यम से युक्तिसंगत एवं प्रभावी

रूप से किया है। अतः माथुर साहब ने अपने युग मानस को समझाते हुए अपने नाट्य साहित्य में नारी की पौराणिक विषय की बाहुल्यता को समेटते हुए अपने नाट्य इतिहास को संभाव्य भूमिका में ही चित्रित किया तथा यथासंभव दिव्य एवं चमत्कारी सामाजिक मिथकीय विषयों को संयत कर घटनाओं की युक्तिसंगत कार्य कारण परम्परा को अधिष्ठित किया है या यो कह सकते है कि मिथक के प्रयोग से उनके नाटकों में व्यग्य का तीखापन नितान्त बढ़ गया है।

विष्णु प्रभावकर अपनी रचना धार्मिता के प्रति पूर्णतः समर्पित, सजग एवं ईमानदार थे। उसका साहित्य उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचायक है। कथनी एव करनी की एकरूपता उनके राष्ट्र भक्त एवं ईमानदार व्यक्तित्व का मूल सूत्र है।

विष्णु प्रभाकर ने अपने नाटक-साहित्य मे नारी समाज का यथार्थ चित्रण किया है। और नाटको से उनकी विभिन्न समस्याओ को उजागर किया है। प्रभाकर जी भारतीय नारियों के प्रति मन मे दहरी सहानुभूति थी जो उन्होने अपने कई पात्रों के द्वारा व्यक्त की है और मानवीय मूल्यों मे अटूट आस्था और मानवता मे गहन विश्वास उनकी अपनी विशेषता है।

सन्दर्भ सूची

1 विष्णु प्रभाकर– डॉ. विश्नाथ मिश्र, पृ.सं.51

2 नटरंग : वर्ष 1 : अंक 3

3 ब्रेडट मैथ्यूज– नाटक साहित्य का अध्ययन, पृ. 15

4 डॉ. लक्ष्मी राय : आधुनिक हिन्दी नाटक, चरित्र सृष्टि के आयाम, 1979, पृ. 230

5 विष्णु प्रभाकर युगे–युगे क्रान्ति, 1969, पृ. 31

6 डॉ. राजलक्ष्मी नायडू : विष्णु प्रभाकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 1991, पृ. 115

7 कोणार्क भूमिका लेत्र सुमित्रा नन्दपंत

8 जगदीशचन्द्र माथुर की नाट्य सृष्टि, लेत्र नरनारायण राय

9 विष्णु प्रभाकर सम्पूर्ण नाटक।

10 डॉ. वन्दना मिश्रा, विष्णु प्रभाकर के नाटकों में मानवीय संवेदना।

11 नाट्य शास्त्र भरतभूमि।

12 नाट्य और रंगमंच– सम्पादक : ललित कुमार शर्मा, डॉ. भानुशंकर मेहता, प्रभा प्रकाशन, 72, पूराबल्दी कीटगंज, इलाहाबाद।

13 डॉ. वीणा गौतम हिन्दी नाटक

14 समकालीन नाट्य साहित्य और राकेश के नाटक , ले. सुषमा अग्रवाल

15 नाटककार जगदीशचन्द्र माथुर, ले.गोविन्द चातक

16 डॉ. सोमनाथ गुप्ता हिन्दी एकांकी उद्‌भाव और विकास ।

17 रामगोपालसिंह चौहान, हिन्दी नाटक : सिद्धान्त और समीक्षा।